वक्तव्य: 01 (रूपक तथा उसके भेद)

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के संस्कृत ऑनर्स प्रथम वर्षीय छात्र-छात्राओं के प्रथम पत्र के प्रथम भाग के लिए। डॉ. विकास सिंह की स्वयं की पुस्तक "नाटकीय पारिभाषिक शब्दावली" से एक अध्याय, छात्रों के लिए गृहपठन हेतु रूपक और नाटकों से सम्बन्धित विषय सामग्री)

पाठ्य संकलनकर्त्ता: डॉ. विकास सिंह, संस्कृत विभागाध्यक्ष, मारवाड़ी कॉलेज, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार।

अवस्थानुकृतिर्नाट्यं रूपं दृश्यततोच्यते ।

रूपकं तत्समारोपात् दशधैव रसाश्रयम् ॥[1]

नाट्य वह है जिसमें-

काव्य में निबद्ध या चित्रित धीरोदात्त,धीरोद्धत,धीरललित एवं धीरप्रशान्त प्रकृति के नायकों तथा नायिकाओं का आङ्गिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक एन चतुर्विध अभिनयों के द्वारा अवस्थानुकरण किया जाता है ।

अवस्थानुकरण से आशय तादात्म्यपत्ति' से है इसका आशय है कि एकरुपता कि ऐसी प्रतीति कि अनुकर्ता (नट) एवं अनुकार्य (रामादि चरित्र) में अभेद की प्रतीति होना ।

दृश्य अर्थात दिखाई पड़ने के कारण ही वह नाट्य रूप कहलाता है, जैसे- नील-पीतादि पदार्थ आँखों से दिखाई पड़ने के कारण **रूप** कहलाता है ।

नाट्य में नट पर काव्य में वर्णित रामादि पात्रों की अवस्था का आरोप होने के कारण नाट्य रूपक के नाम से जाना जाता है । जैसे- रूपकालङ्कार में मुख पर चन्द्रमा का आरोप करने के कारण **मुखचन्द्र:** कहा जाता है ।

नाट्य रसों पर आश्रित होता है तथा दस प्रकार का होता है ।

दृश्यश्रव्यत्वभेदेन पुन:[2] काव्यं द्विधा मतम् ।

---

[1] दशरूपकम्, 1/7

[2] साहित्यदर्पणकार ने काव्य को ध्वनि एवं गुणीभूतव्यङ्गय के आधार पर वर्गीकृत किया है ।

दृश्यं तत्राभिनेयं तद्रूपारोपान्तु रूपकम् ॥[3]

अर्थात् दृश्य एवं श्रव्य के भेद से काव्य पुन: दो प्रकार का होता है। जिसे अभिनय से प्रदर्शित किया जाये, वह दृश्य है।इसे रूपक भी कहते हैं क्योंकि नट चरितों के रूप को अपने मन में आरोपित करता है।

नाटकं सप्रकरणं भाण: प्रहसनं डिम: ।

व्यायोगसमवकारौ वीथ्यङ्केहामृगा एति ॥[4]

नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोगसमवकारडिमा: ।

ईहामृगाङ्कवीथ्य: प्रहसनमिति रूपकाणि दश ॥[5]

रूपक के 10 प्रकार हैं-

1. नाटक
2. प्रकरण
3. भाण
4. व्यायोग
5. समवकार
6. डिम
7. ईहामृग
8. अङ्क
9. वीथी.
10. प्रहसन

[3] साहित्यदर्पण, 6/1

[4] दशरूपकम्, 1/8

[5] साहित्यदर्पणकार, 6/3